

Katha Ch
GRAND PRI

अपनी अपनी पसंद

विजयदान दे

चित्रांकन: अनीता हाशेमी मोघद्दम

c 9/9/2014
d 13/9/20

यह किताब

....

की है



कथा के विषय में

कथा एक लाभ निरपेक्ष संस्था है जो कहानियों और कथा–वाचन के क्षेत्र में 1988 से काम करती आई है और भारत के उच्च प्रकाशन घरों में से एक है। कथा 0–17 साल की उम्र के बच्चों को भारतीय पारम्परिक, मौखिक और लिखित रचनाओं से परिचित कराती है और फ्रेंड्स ऑफ़ कथा के बढ़ते हुए लेखकों, अनुवादकों और साहित्यकारों के समूह के साथ काम करती है। शिक्षकों, छात्रों, नीति विधायकों और निगम क्षेत्र में उच्चतम पहुँच और प्रभाव प्राप्त करना कथा का निरंतर प्रयास है।

हमारा लक्ष्य – पढ़ने की खुशी में संवृद्धि लाना। बच्चों के सामर्थ्य को जानना व साकार करना, सम्प्रदाय के हित में। जाति, लिंग व आर्थिक रूढ़िवादी धारणाओं को बदलना और अनुवाद के माध्यम से देश को एक जुट करना।

हमारा विश्वास – कहानियाँ मदद करती हैं दुर्लभ मित्रता के सृजन में, जो एक सांस्कृतिक शृंखला में लोगों, सृजनात्मक आवेगों और धर्मों को बाँधे रखती हैं। कहानियाँ भावी राष्ट्रों की प्राण–रक्षक हैं।

हमारा सिद्धाँत – एक असाधारण रचनात्मकता साधारण हित के लिए।

अपनी अपनी पसंद

विजयदान देथा

चित्राँकन: अनीता हाशेमी मोघद्दम

हिन्दी अनुवाद: रंजना शुक्ला

क कथा

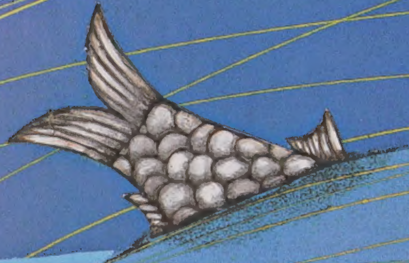






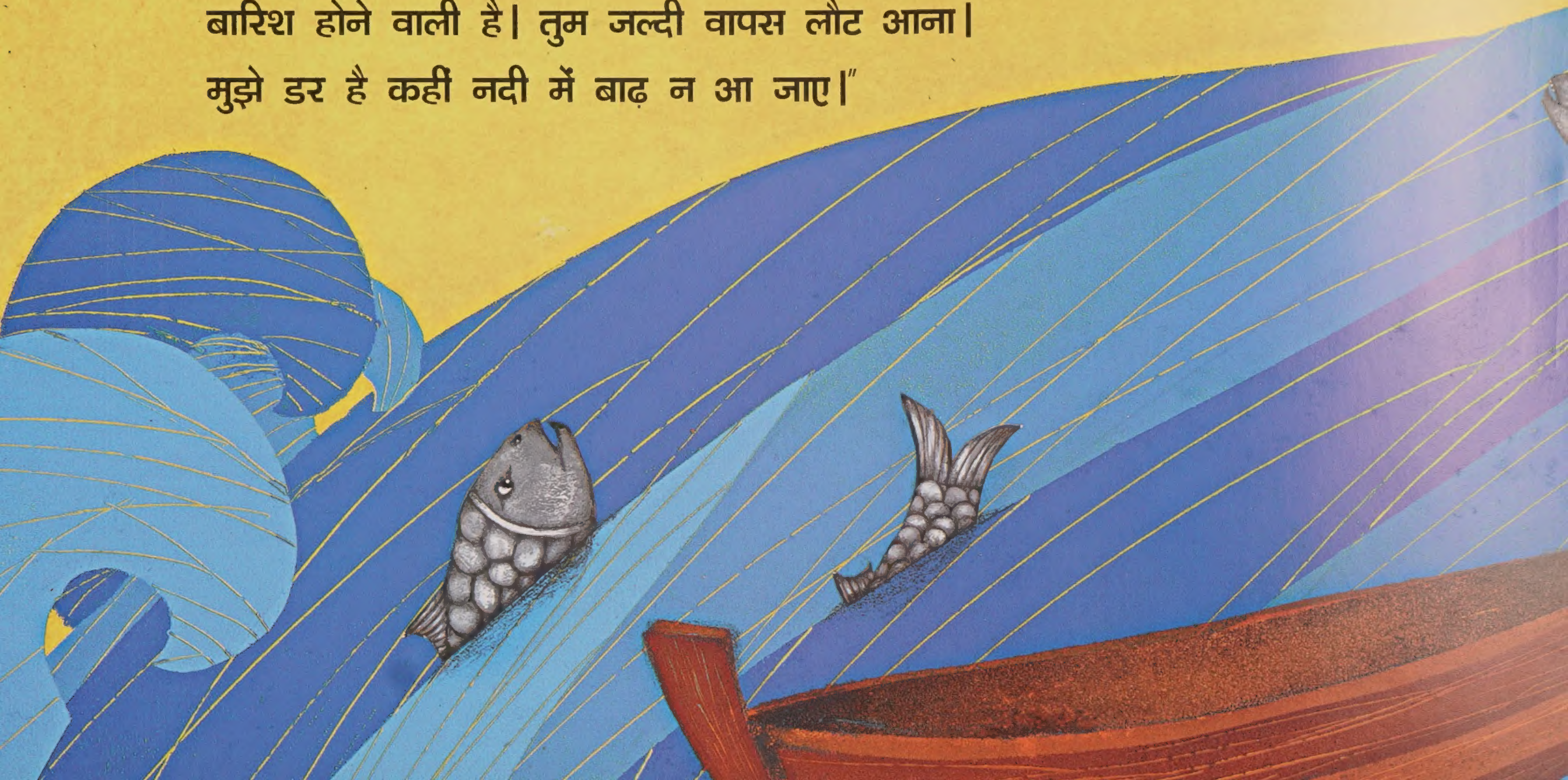
एक समय की बात है, कहीं एक ताज़े पानी की झील हुआ करती थी। और उस झील के किनारे थी एक मछुआरे की झोपड़ी।

वहाँ की हवा में मछलियों की गंध हमेशा तैरती रहती। पर मछुआरे और मछुआरिन को तो यह गंध बहुत भाती थी।



हर रोज़, मछुआरिन अपनी टोकरी में मछलियाँ भर पास के नगर में उन्हें बेचने जाती।

एक दिन जब वह घर से निकल रही थी, मछुआरे ने आसमान की तरफ देखा और कहा, "लगता है तेज़ बारिश होने वाली है। तुम जल्दी वापस लौट आना। मुझे डर है कहीं नदी में बाढ़ न आ जाए।"







मछुआरिन ने मुश्किल से नदी पार
कर नगर में कदम रखे ही थे कि
झमाझम बारिश होने लगी।

वह जल्दी–जल्दी अपनी सारी
मछलियाँ बेच कर वापस घर
की ओर दौड़ चली।

पर जब वह नदी किनारे पहुँची तो देखा की नदी में बाढ़ आ चुकी थी। बहुत **बड़ी–बड़ी** लहरें उठ रही थीं।



दुखी मन वह वापस मुड़ी। अब वह घर नहीं जा सकती थी।

लेकिन वह कहाँ जाये,
रात कहाँ काटे?







तभी उसने मालिन को
आते देखा।



मालिन राजा के खूबसूरत बाग़ की देखभाल करती थी।

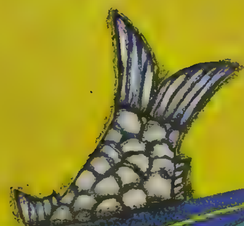
मालिन ने मछुआरिन का परेशान चेहरा देखा और कहा, "नदी में बाढ़ आ गई है न? पर चिंता मत करो। तुम मेरे साथ घर चलो।"



मछुआरिन खुश हुई और
मालिन की बहुत आभारी थी।

चलते–चलते मालिन ने कहा, "अरे तुम
तो बिल्कुल भीग गई हो! तुम्हें बहुत
ठण्ड लग रही होगी।"

मछुआरिन हँसकर बोली, "हम लोग भी तो
मछलियों की तरह ही हैं। कितनी भी गीली
हो जाएँ, हमें ठण्ड नहीं लगती!"









अचानक मछुआरिन बोली,
"ये गंध कैसी?"

मालिन मुस्कुराते हुए बोली, "यह है शाही बाग़।
कितनी भीनी खुशबू, है न?"

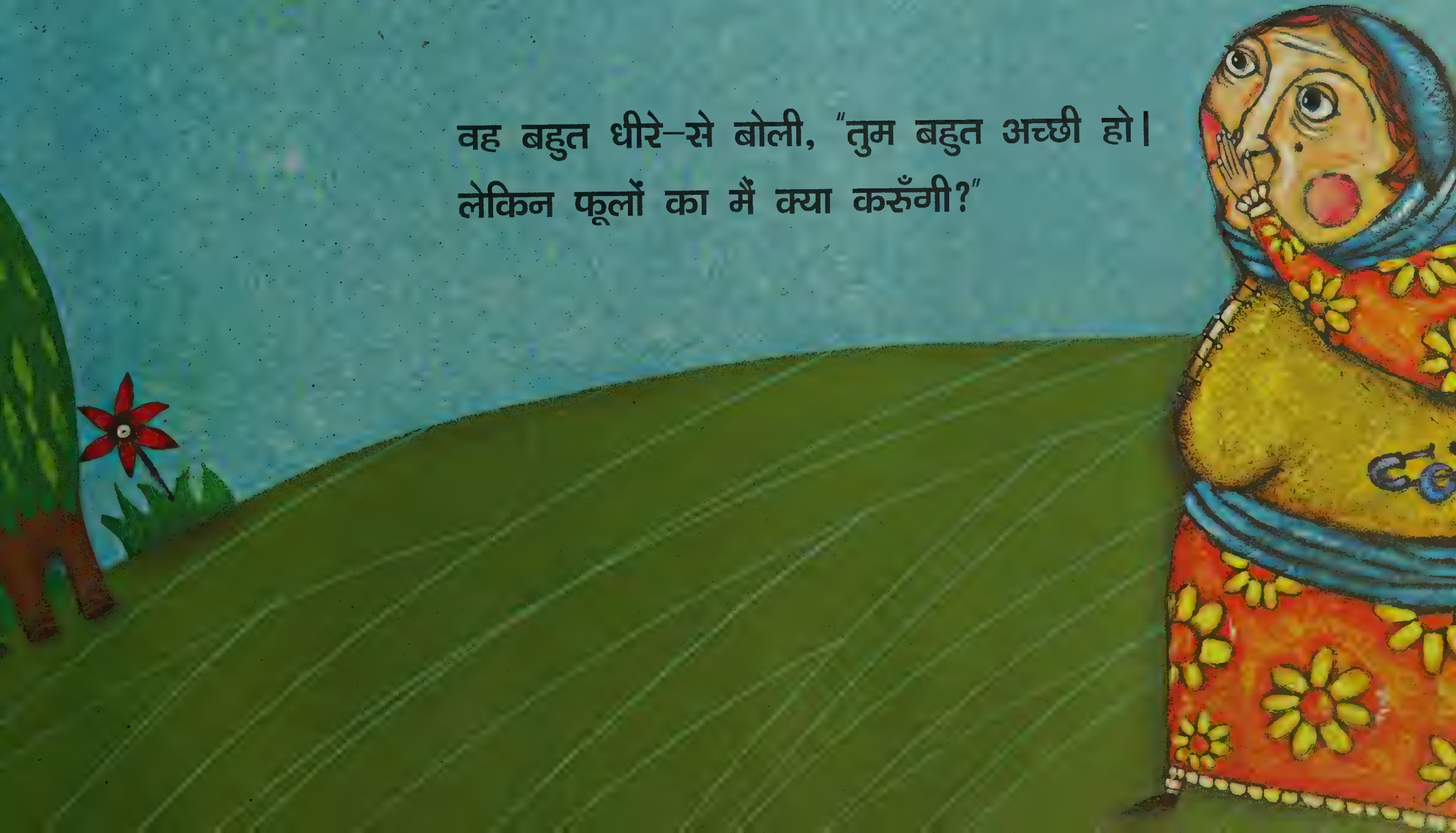
"क्या तुम रात को यहीं सोती हो?" मछुआरिन ने
अपनी नाक पकड़ते हुए पूछा।

"हाँ, और नहीं तो क्या! मैं तो अपने बाग़ और अपने
खूबसूरत फूलों को छोड़ और कहीं सो ही नहीं सकती।
कुछ फूल तुम भी ज़रूर अपने साथ वापस ले जाना।"



मछुआरिन हल्की–हल्की साँस ले रही थी
जैसे कि उसका दम घुट रहा हो।

वह बहुत धीरे–से बोली, "तुम बहुत अच्छी हो।
लेकिन फूलों का मैं क्या करूँगी?"



"क्यों, तुम्हें पता नहीं मेरे फूल कितने अनोखे हैं! एक छू लो तो तीन दिन तक उंगलियाँ महकेंगी!" मालिन ने कहा।

फिर मालिन उसे बाग़ के बगल में बने एक कमरे में ले गई। "तुम यहीं बैठो। मैं तुम्हारे लिए सूखे कपड़े लाती हूँ।"

मछुआरिन सोच रही थी, वह यहाँ साँस भी कैसे ले पाती है? मैं यहाँ कैसे सो पाऊँगी?





मालिन जल्द ही लौट आई, हाथ में फूलों से बिखरे हुए साफ़, सूखे कपड़े लिए।

बेचारी मछुआरिन को तो उनकी गंध से उल्टी आ रही थी।

अचानक मालिन ने हवा को सूँघ अपनी नाक सिकुड़ी और बोली, "उफ़! ये कैसी बदबू है?"





तभी उसकी नज़र कोने में रखी मछली की टोकरी पर पड़ी। "तुम अपनी खाली टोकरी अन्दर क्यों ले आई?"

मालिन झट टोकरी उठा उसे कमरे से बाहर ले गई।

मछुआरिन भला क्या कहती?







दोनों ने साथ बैठकर खाना खाया।

मालिन से कैसी अजीब बदबू आती है,
मछुआरिन सोच रही थी।

मालिन भी मछुआरिन से आती मछली की
बू को किसी तरह बर्दाश्त कर रही थी।

मगर दोनों ने ही एक दूसरे
से कुछ नहीं कहा।

खाने के बाद, मालिन ने आज्ञा ली और अपने कमरे में जाकर चैन की लम्बी साँस ली।

मछलियों की गंध से दूर, वह अपने खुशबूदार फूलों के बिछौने पर आराम से लेटी।



इधर मछुआरिन देर तक करवटें बदलती रही।
पर वह सो ना पायी।

आखिर वह दबे पाँव चुपचाप बाहर गई और अपनी मछली की टोकरी अन्दर ले आई। टोकरी से अपना मुँह ढक, वह लेट गई।





और जल्द ही वह भी गहरी नींद सो गई!

क्या तुम जानते हो?

यह कहानी है भारत से...

दुनिया का सातवाँ
सबसे बड़ा देश

1.2 अरब की आबादी

हिन्दी और 28 अन्य
प्रमुख भाषाएँ

साड़ी में सजी महिलाएँ

दूध और आम उत्पादक
देशों में अग्रणी

मछली, चाय और रेशम का
प्रमुख उत्पादक

दुनिया-भर में अपने कालबेलिया लोकगीत
व लोकनृत्यों के लिए मशहूर

विभिन्न सालन, मसाले और मिठाइयाँ

**क्या तुमने ताजमहल देखा है,
या कभी दूर-दूर तक फैले थार
रेगिस्तान में गए हो?**

ये चित्र हैं इरान से...

दुनिया का अठारहवाँ
सबसे बड़ा देश

7 करोड़ 90 लाख की आबादी

फारसी और छह अन्य
प्रमुख भाषाएँ

तेल और पिस्ते के उत्पादन
में सबसे अग्रणी

हाथ से बने बेहतरीन कालीनों का
उत्पादक और निर्यातक

दुनिया-भर में अपने फारसी
संगीत के लिए मशहूर

बुरका और स्कार्फ़ पहनने
वाली महिलाएँ

कबाब, नान, तहदीग पके चावल और
ज़ायकेदार शरबत

**अगर तुम कभी इरान जाओ तो वहाँ के मशहूर फारसी
बगीचे और पर्सिपोलिस जाना मत भूलना।**

हिन्दी में कहते हैं नमस्ते, और अंग्रेज़ी में हैलो!

क्या तुम जानते हो
कि भारत के विभिन्न क्षेत्रों में लोग एक
दूसरे का अभिवादन किस तरह करते हैं?

अभिवादन के तरीकों को उनकी सही भाषा से जोड़ी मिलाओ!

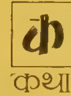
मराठी	नमस्कार
मणिपुरी	नौमोश्कार
बंगाली	केम छो
गुजराती	खुरुमजरी
तमिल	खम्मा घणी सा
तेलुगु	वणक्कम
पंजाबी	नमस्कार! कसा काय?
राजस्थानी	नमस्कारम
उर्दू	सत स्री अकाल
कन्नड़	सलाम अलैकुम

उत्तर:
मराठी - नमस्कार! कसा काय? | मणिपुरी - खुरुमजरी | बंगाली - नौमोश्कार
गुजराती - केम छो | तमिल - वणक्कम | तेलुगु - नमस्कारम
पंजाबी - सत स्री अकाल | राजस्थानी - खम्मा घणी सा
उर्दू - सलाम अलैकुम | कन्नड़ - नमस्कारा

विजयदान देथा को प्यार से बिज्जी कहा जाता है। अपने बोरुंदा गाँव के संगी–साथियों से सुनी कहानियों को फिर से रचने की कला में आपको महारथ हासिल है। आपने 800 से भी ज़्यादा लघुकथाएँ लिखी हैं जिनका अँग्रेज़ी व अन्य कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है। इनमें बच्चों की कहानियों का एक संग्रह *अनोखा पेड़* भी शामिल है। 'अपनी अपनी पसंद' मूलतः राजस्थानी में लिखी गई कहानी 'आप आपरी सौरभ' से ली गई है, जो कि *द गौस्पेल ऑफ रामकृष्ण* की एक कथा पर आधारित है। आपकी कहानियों में रेगिस्तानी रेत गंधाती है। इनमें राजस्थानी लोकसाहित्य, लोककलाएँ, लोकसंगीत और बोलियों की गहरी छाप नज़र आती है। आपको पद्मश्री, साहित्य अकादमी पुरस्कार और कथा चूड़ामणि पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

अनीता हाशेमी मोघद्दम एक उत्कृष्ट इरानी चित्रकार हैं। आपन पत्रिकाओं और किताबों के लिए चित्र बनाए हैं। आपके पुरस्कृत अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियाँ आयोजित हुई हैं। बच्चों के लिए चित्रकारी और कला कार्यशालाओं में भाग लेने में आपकी गहरी रुचि है।

रंजना शुक्ला लखनऊ में जन्मी, एक रिटायर्ड हिंदी की अध्यापिका अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करती हैं। उपन्यास, कहानी, और अध्ययन में उनकी विशेष रुची है।



कथा

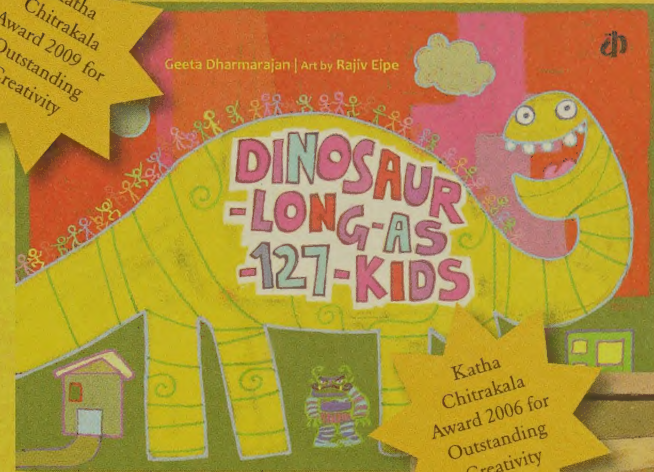
पहला हिन्दी संस्करण 2012

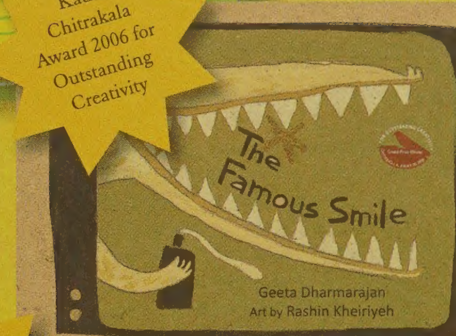
एजियन ऑफसेट प्रिंटर्स, नोएडा (उत्तर प्रदेश) द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-89934-03-3

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा स्कूल दिल्ली के बस्ती, मोहल्लों और अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में स्थित हैं।
ए–3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नई दिल्ली–110017
दूरभाष: 4141 6600 . 4182 9998 . फैक्स: 2651 4373
ई–मेल: marketing@katha.org
वेबसाइट: www.katha.org
हिन्दी अनुवाद: रजना शुक्ला

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।

Katha Chitrakala Award



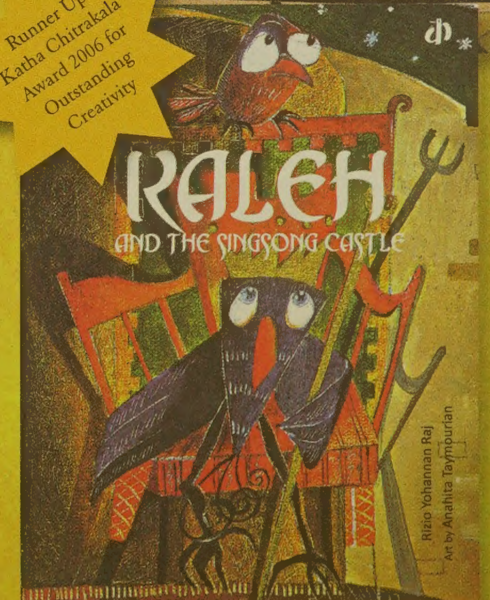


कथा चित्रकला पुरस्कार बच्चों की किताबों के श्रेष्ठ चित्रांकनों और संकल्पनाओं को सम्मानित करने का एक प्रयास है। उत्कृष्टता की इस अन्तर्राष्ट्रीय खोज में एक अनूठे दृष्टिकोण और रंगों, आकारों का जादुई प्रयोग करने वाले कलाकार आमंत्रित किए जाते हैं। भारत में यह अपनी तरह का एकमात्र प्रयास है। इसमें भाग लेने की कोई बन्दिशें नहीं हैं – बच्चों की किताबों के संसार में अपनी अमिट छाप छोड़ने के लिए, स्थापित और उभरते सभी कलाकार इसमें शामिल हो सकते हैं।

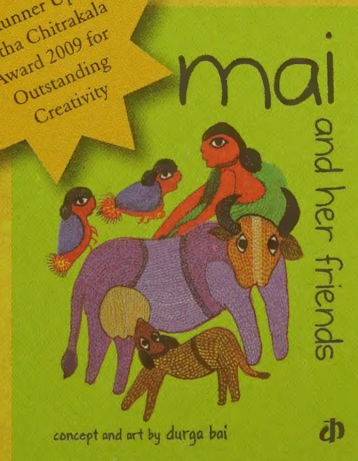
कथा चित्रकला पुरस्कार के लिए यह बहुत गर्व की बात है कि अब तक 14 देशों के 300 से भी ज़्यादा चित्रकारों ने इसमें भाग लिया है।

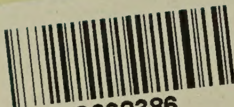
Katha has a real soft corner for kids. Which is why it ... create[s] such gorgeous picture books for children.

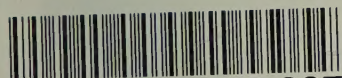
— Time Out








C632386



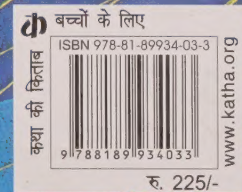


मालिन को प्यारे हैं फूल, और मछुआरिन को मछली।
बरसात के एक दिन होती है दोनों की मुलाकात।
बात है दोनो की सही, दिल की हैं दोनों ही भली।
लेकिन एक साथ भला दोनों की कैसे कटे रात?

तो आइये पढ़िए राजस्थानी लोकसाहित्य में रची-बसी लोकप्रिय कथाकार पद्मश्री विजयदान देथा की यह मज़ेदार-लज्ज़तदार कहानी। जिसे सजाया है बेहद दिलकश चित्रों से ईरानी चित्रकार अनीता हाशेमी मोघद्दम ने। कथा चित्रकला - उत्कृष्टता की खोज श्रृंखला लेकर आई है यह किताब एक ऐसी खुशबु और ज़ायका लिए जो सीमाओं और बन्दिशों को नहीं मानती।







क बच्चों के लिए
कथा की किताब
ISBN 978-81-89934-03-3
9788189934033
www.katha.org
रु. 225/-

